न् इ

हात्यूहः कल कर्णको । चात्र के पि न बाह्स्ला च्यातिशान ब्वासरे
॥ ७६४॥ निर्व्यूहे द्वारि निर्यासे शेखरे नागद न को। निर्द्रहो निग्न
है न के बिस्ति में दे ऽयानिग्रहः ॥ ७६५॥ बन्ध के मन्दिने सी मिप्रग्रहः किर्
शिभु जे। नुलास्त्र चे ऽ म्यादिर श्मी खर्वी चित्रपार थे॥ ७६६॥ बन्धने
वद्यापवाही व्यवहारं बुवेगयोः। प्रवेही वायुमें देसा द्वायुमा चे बहिर्ग ते।
॥ ७६७॥ प्रग्नाहः स्वानुलास्त्र चे वृषादी नाञ्च बन्धने। पटही बाद्युभा र मोवार हो नाग के किरेश। ७६ ८॥ मे घेमुस्ते गिरी विक्ती बार ही गृष्टि भेष जे। मान यीपविदेह स्वानिर्देश में यिले ऽ पिच॥ ७६ ए॥ बिग्न हो वृष्ट् दुद्वारेगाह संक्ष्ट्री पयोर पि। खुवह स्वान हो खुवह स्वार ह्वा बार हो विग्न हो विग्न हो विग्न हो विग्न हो प्राह्म स्वान हो स्वान हो

हार विति हो । इत्याचार्या हे मंचन्द्र विर चिते डेनेबार्थ । विति हो । विति ह

अंगार्व उस्ते श्रिमहोप्रचेत्र एटने। अंगारिका निर्धिका हिने अन्व स्थवनार ने ॥१॥अलिपकः पिनेभृद्गे ऽलिंपकः पद्मानेसरे। मधूनेका किले भे केऽ प्रमृतका मिल्लाकं दि॥२॥ चुल्याच्याक्षीपका व्याधिनिंद के बातर ज्या पि। आकल्पक स्वमामा ह्यां वातु न्व लिका मुद्राः॥ ३॥ आ खर्निक स्वा खरिव कि एवनु कु चैरियाः। जन्म लिका नुहे लायां तरङ्गे निक्र एक्या रिप

नार् ध